फोटो-राजेश अरोड़ा

महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में विधिवत कामकाज पहली जुलाई 2011 को शुरू हुआ जब कोलकाता के बीचों बीच पार्क सर्कस (2ए/ 2बी मृगेंद्रलाल मित्र रोड , कोलकाता) में भाड़े की जगह मिल गई। कोलकाता केंद्र ने 2011-12 में कई शैक्षणिक कार्यशालाओं , अनुवाद कार्यशालाओं और संगोष्ठियों का आयोजन किया जिसका विवरण इस प्रकार है-

19 जुलाई 2011स्थान-कोलकाता केंद्र का सभा कक्ष

रचना की मूल संवेदना तक पहुंचने की जरूरतः केदारनाथ सिंह

कोलकाता, 19 जुलाई। महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में आज प्रेमचंद कीकहानियों में वर्तमान समय के लिए उपयोगी मूल्य तलाशने पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। लोरेटो कालेज की हिंदी विभागाध्यक्ष डा. राखी राय हल्दर ने पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन के जरिए बताया कि प्रेमचंद की मंत्र और सवा सेर गेहूं कहानियों को उस युग के लोगों की चित्तवृत्ति और ऐतिहासिक संदर्भों को खंगालते हुए समाजशास्त्र, मनोविज्ञान जैसे विषयों के सहारे आज के समय के लिए बहुत सारे उपयोगी मूल्य खोजे जा सकते हैं। कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए हिंदी के वरिष्ठ कवि केदारनाथ सिंह ने कहा कि इस तरह की गंभीर कार्यशालाओं के आयोजन से रचना की मूल संवेदना तक पहुंचते हुए साहित्य को आम लोगों तक पहुंचने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि इसकी बहुत जरूरत है। कार्यक्रम का संचालन विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे ने किया।

13 सितंबर 2011स्थान-कोलकाता केंद्र का सभा कक्ष

हिंदी विश्वविद्यालय में पुस्तक प्रदर्शनी

कोलकाता, 13 सितंबर। हिंदी दिवस की पूर्व संध्या पर महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में आज विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित पुस्तकों, छवि संग्रहों और कैसेट की प्रदर्शनी लगाई गई। पश्चिम बंग हिंदी अकादमी के अध्यक्ष विवेक गुप्ता, सन्मार्ग के संपादक हरिराम पांडेय, प्रभात खबर के स्थानीय संपादक कौशल किशोर त्रिवेदी, हिंदी अकादमी के सदस्य राधा कृष्ण प्रसाद और विश्वभारती विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन की प्रोफेसर डा. मंजूरानी सिंह समेत भारी संख्या में विद्वानों और पाठकों ने प्रदर्शनी देखी।

16 नवंबर 2011स्थान-कोलकाता केंद्र का सभा कक्ष

हिंदी ने बनाया मुझे अखिल भारतीयः सुनील गंगोपाध्याय

कोलकाता। एक समय परंपराभजक की पहचान लेकर उभरे बांग्ला के वरिष्ठ कवि और कथाशिल्पी सुनील गंगोपाध्याय ने कहा है कि फिल्मकारों को साहित्यिक कृतियों में मामूली परिवर्तन का अधिकार है। श्री गंगोपाध्याय सोलह नवंबर 2011 को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र के संवाद कार्यक्रम में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दे रहे थे। यह कार्यक्रम विवि के कोलकाता केंद्र में ही आयोजित किया गया था।हिंदी के वरिष्ठ कवि केदारनाथ सिंह ने पूछा कि 'मनेर मानुष' उपन्यास पर इसी नाम से बनी फिल्म में मूल कृति में कतिपय परिवर्तन होने पर उनकी क्या प्रतिक्रिया है, इसके जवाब में श्री गंगोपाध्याय ने कहा कि उनकी कथाकृतियों पर 'अरण्येर दिनरात्रि', 'प्रतिद्वंद्वी', 'सबुज द्वीपेर राजा', 'जीवन जे रकम', 'अर्जुन', 'श्याम साहब', 'मधुमय' से लेकर 'मनेर मानुष' शीर्षक जो फिल्में बनीं और ये फिल्में सत्यजीत राय से लेकर गौतम घोष जैसे फिल्मकारों ने फिल्में बनाईं तो उन्होंने कहानी के ट्रीटमेंट के साथ मामूली परिवर्तन भी किया, इसका हक फिल्मकारों को है।

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विवि के कोलकाता केंद्र में आयोजित 'सुनील गंपोपाध्याय से संवाद' कार्यक्रम में बाएं से डा. कृपाशंकर चौबे, श्री गंगोपाध्याय, केदारनाथ सिंह और सुबोध सरकार।

दो सौ किताबों के लेखक सुनील गंगोपाध्याय ने एक अन्य प्रश्न के उत्तर में कहा कि हिंदी ने उन्हें अखिल भारतीय बनाया। पहले उनकी किताबें हिंदी में अनूदित हुईं और फिर हिंदी से मराठी तथा दूसरी भारतीय भाषाओं में। इसलिए वे हिंदी के प्रति कृतज्ञ हैं। 'प्रभात खबर' के स्थानीय संपादक तारकेश्वर मिश्र के प्रश्न के उत्तर में सुनील गंगोपाध्याय ने कहा कि आज बंगाली घरों में अंग्रेजी का प्रभाव बुरी तरह घर कर गया है। बंगाली युवक भारतीय भाषा संस्कृति के मुकाबले यूरोप की भाषा- संस्कृति को महत्व देने लगा है। बंगाली युवा वर्ग की रुचि बांग्ला साहित्य पढ़ने के बाद सीधे यूरोप के साहित्य में हो जाती है, यही कारण है कि बांग्ला में हिंदी साहित्य का अनुवाद लाने में बड़े प्रकाशक उदासीनता दिखाते हैं। श्री गंगोपाध्याय ने 'भारत मित्र' के संपादक मोहम्मद इसराइल के सवाल के जवाब में स्वीकार किया कि बांग्ला की जितनी रचनाएं हिंदी में अनूदित होती हैं , उतनी हिंदी की रचनाएं बांग्ला में अनूदित नहीं हो पाती। हिंदी की बांग्ला से एकतरफा संबंध की शिकायत जायज है। श्री गंगोपाध्याय ने कहा कि हिंदी की अनेक अच्छी रचनाओं के बांग्ला अनुवाद की बहुत जरूरत है। अच्छे पाठक की पहचान उनके पढ़ने की रूचि से होती है।

बांग्ला के प्रसिद्ध कवि और सिटी कालेज कोलकाता में अंग्रेजी के प्रोफेसर सुबोध सरकार के सवाल के जवाब में श्री गंगोपाध्याय ने कहा कि टेलीविजन के आकर्षण और इसकी चमक ने युवाओं में साहित्यिक रूचि काफी कुछ छीन ली है, सिर्फ युवा ही नहीं प्रौढ़ वर्ग भी इसके आकर्षण में आ गया है। लोगों की रुचि कम होने से साहित्यिक पत्रिकाओं का सिलसिला भी सिकुड़ने लगा और अब हालात सामने हैं। हालांकि हिंदी में साहित्यिक पत्रिकाओं के

प्रसार के कम होने के बावजूद बांग्ला में साहित्यिक पत्रिकाओं का सिलसिला ठीक ठाक है, कविताएं भी अच्छी लिखी जा रही हैं,लेकिन प्रौढ़ गद्य कम दिखाई देता है।

लोरेटो कालेज, कोलकाता की हिंदी विभागाध्यक्ष डा.राखी राय हल्दर के प्रश्न के जवाब में श्री गंगोपाध्याय ने कहा कि वे अपनी कहानियों में जब गांव की परिकल्पना करते हैं तो बचपन का माइचपाड़ा गांव बरबस याद आता है,जहां मुश्किल ढाई तीन साल रहे थे। आज भी उसकी यादें ताजा हैं। वहां के रास्ते, पेड़ खेत तालाब, के बिंब दिमाग में उभरते हैं। फरीदपुर जिले का माइचपाड़ा गांव अब बांग्लादेश में हैं। सुशील कांति के प्रश्न के उत्तर में सुनील गंगोपाध्याय ने कहा कि बंटवारे की त्रासदी की आवाज उनकी कहानियों में सुनी जा सकती है। डा. संजय जायसवाल के सवाल के जवाब में सुनील गंगोपाध्याय ने कहा कि अभी तो उनका सर्वश्रेष्ठ लेखन आना बाकी है।

कार्यक्रम के आरंभ में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे ने स्वागत भाषण करते हुए कहा कि यह संवाद श्रृंखला विवि के कुलपति विभूतिनारायण राय के सुझाव पर शुरू की गई है। इसका उद्देश्य बांग्ला ,उड़िया, असमिया सहित पूर्वोत्तर की भाषाओं के साथ हिंदी का संवाद बढ़ाना और तदनुसार सांस्कृतिक सम्बन्धों का निर्माण करना है। उन्होंने बताया कि मशहूर शक्सियतों व विद्याब्रतियों से संवाद की यह श्रृंखला हर महीने आयोजित की जाएगी। इससे शोधार्थियों व अध्येताओं को अपनी जिज्ञासाएं शांत करने का अवसर भी मिलेगा।

22 नवंबर 2011स्थान-कोलकाता केंद्र का सभा कक्ष

शुद्धता हमेशा भाषा की शत्रु होती है-केदारनाथ सिंह

कोलकाता, 22 नवंबर। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के कोलकाता केन्द्र ने 22 नवंबर 2011 को अपने सभाकक्ष में संवेदनहीन होते समय में कविता (अभिज्ञात के नए कविता संग्रह 'खुशी ठहरती है कितनी देर' के विशेष संदर्भ में) पर एक संगोष्ठी का आयोजन वरिष्ठ कवि केदारनाथ सिंह की अध्यक्षता में किया। इस अवसर पर डा. केदारनाथ सिंह ने कहा कि अभिज्ञात ने कविता में गद्य का बेहतरीन प्रयोग करते हुए कई विलक्षण कविताएं लिखी हैं। यह अतिरिक्त बात उनके काव्य-व्यक्तित्व को अधिक अर्थवान बनाती है। वे कविता में क्रीड़ा-कौतुक करते हैं और भाषा व भावों के साथ खेलते हुए एक ऐसी रचनात्मकता अर्जित करते हैं, जो उनका अपना क्रिएशन है। यह कार्य हिन्दी कविता में नागार्जुन ही कर सकते थे।

'संवेदनहीन होते समय में कविता' पर आयोजित संगोष्ठी में बाएं से अभिज्ञात, नवारुण भट्टाचार्य,

केदारनाथ सिंह और डा. शंभुनाथ

केदार जी ने कहा कि यह विस्मयकारी लगा कि अभिज्ञात टूटाने की आवाज़ों का स्वागत करते कवि हैं। ग़ालिब की तरह उन्हें भी टूटने की आवाज़ें अच्छी लगती हैं। अपनी कविता 'तोड़ने की शक्ति' में कहते हैं-'जाने क्यों अच्छी लगती है मुझे टूटने की आवाज़ें'। इस भाव का जन्म काफी पहले कलकत्ता में मिर्जा ग़ालिब के यहां उस समय हुआ, वे जब कलकत्ता आये थे , शायद उन्होंने तभी ये शेर कहा होगा- ' न गुल-ए-नग़्मा हूँ , न परदा-ए-साज़/मैं हूँ अपनी शिकस्त की आवाज़।' ग़ालिब कलकत्ता में ढाई साल रहे। यहां उन्हें नयी चेतना मिली। वे अपने परिवेश के प्रति बेहद चौकन्ने हैं। यह बात उनकी दंगे पर लिखी कविता में विशेष तौर पर उभर कर आयी है। दंगे पर उन्होंने एक अच्छी कविता लिखी है 'दंगे के बाद'। मेरठ में हुए दंगे पर नागार्जुन ने भी 'तेरी खोपड़ी के अन्दर' कविता लिखी थी। दोनों की कविताओं में साम्य यह है कि ये इस क्रिएटिव तरीके से लिखी गयी हैं कि वे दंगे पर सामान्यीकृत प्रतिक्रया नहीं हैं। सामान्य को कविता में किस प्रकार विशिष्ट बनाया जाता है वह काबिलियत अभिज्ञात ने अर्जित कर ली है। अभिज्ञात की एक और बात जो मुझे आकृष्ट करती है वह यह कि वे साहित्य की अतिरिक्त गंभीरता को तोड़ते हैं। कविताओं में कई जगह हास्य या व्यंग्य करते हैं, जिनमें क्रीड़ा भाव अनेक स्थानों पर मिलता है और वे बहुत सहज ढंग से बड़ीं बात कह जाते हैं। उसकी एक छोटी सी कविता 'भगवान जी से' का उल्लेख करना चाहता हूं। इसमें कवि ने भगवान से समान स्तर पर बात की है। भगवान का कोई आतंक नहीं है। ऐसा सिर्फ़ नागार्जुन कर सकते थे। एक वैराग्यपन की भाषा है अभिज्ञात की इस कविता में , यथा- 'प्रभु! तुम्हारी छोटी सी मूर्ति के पास/ठीक नीचे रखे हैं झाड़ू और जूते चप्पल/उन्हें तुम इग्नोर करना वह तुम्हारे लिए नहीं हैं/ तुमसे अपील है कि तुम अपने काम से काम रखो /और वह जो फूल तुम्हारी मूर्ति के पास रखा है/और जली हैं अगरबत्तियां, जला है एक घी का दिया/बस वही तुम्हारे हैं, उतना ही है तुम्हारा तामझाम, माल असबाब/तुम वहीं तक सीमित रहो, और उतने में ही मगन/ यह छोटा सा घर है मेरा , उसी में तुम्हें भी ज़गह दी है यही क्या कम है ?' 'हावड़ा ब्रिज' कविता कोलकातावासियों को खास तौर पर पढ़नी चाहिए। मैंने भी पुल पर कविता लिखी हैं। मेरी जानकारी में हावड़ा ब्रिज पर हिन्दी में ऐसी कविता नहीं लिखी गयी। उनकी कविताओं में हिन्दी से इतर भाषा के उन्होंने कहा कि शुद्धता हमेशा भाषा की शत्रु होती है। बांग्ला के वरिष्ठ साहित्यकार नवारुण भट्टाचार्य ने कहा कि भाषा की शुद्धता पर हमें बहुत जोर नहीं देना चाहिए। विश्वविद्यालय के कोलकाता केन्द्र के प्रभारी डॉ.कृपाशंकर चौबे ने कहा कि कविता में स्थानीयता का बहुत महत्व है। वह कविता का एक गुण बन जाती है। यह विशेषता

राजेश जोशी से लेकर अभिज्ञात की कविताओं में मिलती है। सुपरिचित आलोचक डॉ.शंभुनाथ ने कहा कि इस संवेदनहीन होते समय में संवेदना की बैटरी को चार्ज करने वाले कवि केदार जी और अभिज्ञात हैं। अभिज्ञात की कविताओं में स्थानीयता अभी बची हुई है। वे स्थान को इतिहास व स्मृति के हवाले नहीं करते। 'माझी का पुल' और 'हावड़ा ब्रिज' जैसी कविताएं स्थान को बचाये हुए हैं। ये स्थान लोगों की स्मृतियों में झूलते रहते हैं। नागार्जुन की कविता 'पछाड़ दिया मेरे आस्तिक' की तरह अभिज्ञात भी कविता लिखते हैं 'सूर्य की सिंचाई'। दोनों कविताएं अपने-अपने समय की और अपनी तरह की अद्भुत कविताएं हैं। कार्यक्रम का संचालन कर रही कलकत्ता विश्वविद्यालय की हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ.राजश्री शुक्ला ने कहा कि अभिज्ञात की कविताओं में सामान्य अनुभवों का विशेष आस्वाद है। एक सामान्य अनुभव का अंश हमारे सामने आता है और अपने आपको काटकर विशेष हो जाता है। ये कविताएं स्पंदित करती हैं। इन कविताओं में स्व का विस्तार है। इस कार्यक्रम में अभिज्ञात ने 'पैसे फेंको' और 'वापसी' कविताओं का पाठ किया।

12 जनवरी 2012स्थान-कोलकाता केंद्र का सभा कक्ष

काव्यानुवाद पर कार्यशाला

कोलकाता । नलिन मोहन सान्याल के 150 वें जन्म वर्ष पर गत 12 जनवरी 2012 को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र ने 'काव्यानुवाद की समस्याएं' विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया। नलिनी मोहन सान्याल हिंदी के पहले एम.ए. हैं। वे हिंदी व बांग्ला दोनों भाषाओं के लेखक हैं। उनकी याद में आयोजित कार्यशाला को संबोधित करते हुए कवि, अनुवादक एवं प्रगतिशील वसुधा के सम्पादक राजेन्द्र शर्मा ने कहा कि अपने देश में अनुवाद का काम उस तरह होता है जैसे कोई पुरानी फिल्म के गीत को याद कर बाथरूम में गुनगुनाने की कोशिश करता है , जबकि इस काम को काफी गंभीरता से लिया जाना चाहिए। भारत में अनुवाद के इतिहास की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि दाराशिकोह ने काफी पहले उपनिषदों का अनुवाद करवाया था वह सांस्कृतिक अनुष्ठान था जबकि अंग्रजों ने फोर्ट विलिमय के माध्यम से अनुवाद का जो कार्य शुरू किया वह उपनिवेश की महत्वाकांक्षी आवश्यकताएं थीं

कार्यशाला को संबोधित करते हुए प्रताप राव कदम। मंच पर बैठी हैं डा. चंद्रा पांडेय और नवारुण भट्टाचार्य।

हमारा देश जैसी सांस्कृतिक विभिन्नताओ में जीता है वहां अनुवाद नैसर्गिक प्रक्रिया है। साहित्य का अनुवाद टीका या भाष्य नहीं होता। वह सांस्कृतिक प्रक्रिया का अंग होता है। सोवियत रूस की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि एक समय था जब उस देश ने अपने देश के तमाम साहित्य को दुनिया भर में प्रचारित प्रसारित करने के लिए व्यापक पैमाने पर अनुवाद करवाया था। अनुवाद के लक्ष्य कई बार भिन्न प्रकार के होते हैं।

भोपाल से आए कवि, गद्यकार और अनुवाद के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर चुके ओम भारती ने कहा कि कविता का अनुवाद किसी अन्य भाषा में हो ही नहीं सकता। वह मूल कविता की व्याख्या , पुनर्वव्याख्या होता है। शाब्दिक अर्थ बोध होता है। अनुवादक उसमें अपना आंशिक योगदान करेगा ही , जबकि मूल को मूल रहने देना एक बड़ी चुनौती होती है। अनुवादक अपने को इससे कैसे रोके, यह बड़ी बात है। मूल भाषा के कवि की अभिव्यक्ति को उसी रूप में अक्षुण्ण रखना प्रायः संभव नहीं हो पाता। अनुवाद दरअसल प्रभावी ढंग का अंतरभाषिक संवाद होता है। अनुवाद के क्षेत्र में उन्होंने धर्मवीर भारती के संपादन में प्रकाशित विदेशी कवियों की कविताओं के अनुवाद के संकलन 'देशांतर' का उल्लेख किया और उसे मील का पत्थर बताया। उन्होंने देशांतर की दूधनाथ सिंह लिखित और आलोचना में प्रकाशित समीक्षा को भी अनुवाद की समस्याओं को समझने और अनुवाद की संभावना को परखने के लिहाज से महत्वपूर्ण करार दिया और उसे बीजमंत्र माना।

कार्यशाला में बाएं से चंद्रा पांडेय, नवारुण भट्टाचार्य. मृत्युंजय कुमार सिंह, राजेंद्र शर्मा और कृपाशंकर चौबे।

गायक, कवि एवं अनुवादक मृत्युजंय कुमार सिंह ने कहा कि एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद केवल शब्दानुवाद और भावानुवाद भर नहीं होता बल्कि उसके सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को भी अभिव्यक्त करना होता है। उन्होंने हिन्दी की समृद्धि की चर्चा करते हुए कहा कि हिन्दी में उसकी बोलियों और अन्य भारतीय भाषाओं से हेलमेल और संस्कृत से सम्बद्धता के कारण जितने पर्यायवादी शब्द हैं, दूसरी किसी भाषा में नहीं। नीलकंठ और कल्पतरू जैसे शब्दों का अंग्रेजी में अनुवाद बड़ी चुनौती है। उन्होंने कहा कि छंदबद्ध कविता के अनुवाद में इस बात का भी ध्यान रखा जाना चाहिए कि अनुवाद की गयी भाषा में भी छंद हो ताकि वह मूल भाव के करीब पहुंचे।

खंडवा से आए कवि प्रताप राव कदम ने कहा कि बुद्ध ने अपने शिष्यों से कहा था कि उनके वचनों को वे अपने अपने क्षेत्र की भाषा में प्रचारित प्रसारित करें जिससे अनुवाद की प्रक्रिया ने गति पकड़ी। उन्होंने कहा कि 'गीतांजलि' का हालांकि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने स्वयं अंग्रेजी अनुवाद किया था किन्तु उनकी मूल बांग्ला कविताओं की बात कछ और है।

विख्यात बांग्ला साहित्यकार नवारुण भट्टाचार्य ने कहा कि अनुवाद मनुष्य को आपस में जोड़ने की सबसे सशक्त सांस्कृतिक प्रक्रिया है। मनुष्य के संवाद की शक्ति अनुवाद से बढ़ती है। शुद्धता पर जोर नहीं होना चाहिए। डॉ.अभिज्ञात ने कहा कि कई बार किसी कविता का ठीक-ठीक एक अर्थ निकाल पाना ही मुश्किल हो जाता है , मुक्तिबोध की 'अंधेरे में' कविता उसका उदाहरण है। एक ही कविता का जब उसी भाषा के लोग अलग अलग अर्थ निकालते हैं तो फिर दूसरी भाषा में उसके अनुवाद का क्या हाल होगा। कविता के अनुवाद में परफेक्शन की

गुंजाइश कम होती है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कवयित्री एवं अनुवादिका डॉ.चंद्रकला पाण्डेय ने कहा कि अनुवाद में एक बड़ी समस्या रचना के सांस्कृतिक संदर्भ को ठीक-ठीक समझने की होती है। हर रचना का एक सांस्कृतिक संदर्भ होता है उसे समझे बगैर अनूदित रचना को नहीं समझा जा सकता। एक भाषा के रीति रिवाज दूसरी भाषा से जुड़े लोगों के रीति रिवाज से अलग होते हैं ऐसे में रचना के मूल कथ्य के अनदेखे रह जाने का खतरा होता है। कार्यक्रम का संचालन विश्वविद्यालय के कोलकाता केन्द्र के प्रभारी डॉ.कृपाशंकर चौबे ने किया।

25 फरवरी 2012स्थान-कोलकाता केंद्र का सभा कक्ष

बांग्ला से एकतरफा संबंध बनाए हुए है हिंदी-महाश्वेता

कोलकाता, 25 फरवरी। विख्यात लेखिका महाश्वेता देवी ने कहा है कि हिंदी एक तरह से बांग्ला से एकतरफा संबंध बनाए हुए है। जिस मात्रा में बांग्ला का समकालीन साहित्य हिंदी में अनूदित होकर प्रकाशित हो जाता है , उसकी तुलना में बांग्ला में हिंदी रचनाएं नहीं अनूदित होतीं। इस एकतरफा संबंध को दो-तरफा बनाए जाने की जरूरत है। महाश्वेता देवी गत 25 फरवरी की शाम महात्मा गांधी अंतर्राष्टीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता क्षेत्रीय केंद्र में पत्रकारिता और साहित्य के अंतर्संबंध पर आयोजित संगोष्ठी में अध्यक्षकीय वक्तव्य दे रही थीं। यह संगोष्ठी हरिराम पांडेय की किताब कही-अनकही और हरेंद्र कुमार पांडेय के भोजपुरी उपन्यास जुगेसर के विशेष संदर्भ में आयोजित थी। इसे संबोधित करते हुए महाश्वेता देवी ने कहा कि पत्रकारिता और साहित्य में अंतर्संबंध नहीं होने पर दोनों अनुशासनों को नुकसान होगा। उन्होंने कहा कि वे अपनी पत्रिका बर्तिका में हिंदी के समकालीन साहित्य को अनूदित कर लाती हैं और लाती रहेंगी।

महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र की संगोष्ठी में बाएं से केदारनाथ सिंह, महाश्वेता देवी और कृपाशंकर चौबे।

संगोष्ठी को संबोधित करते हुए हिंदी के वरिष्ठ कवि केदारनाथ सिंह ने कहा कि आज की पत्रकारिता अपवादों को छोड़कर साहित्य को खारिज कर चुकी है। आज संपादक अमूमन संपादकीय नहीं लिखते। उन्होंने कहा कि बाजारवाद के दबाव में साहित्य और पत्रकारिता में मेल नहीं रह गया है। संगोष्ठी को सुब्रत लाहिड़ी , अजय महमिया, हरिराम पांडेय और हरेंद्र कुमार पांडेय ने भी संबोधित किया।

संवादः संगोष्ठी के दूसरे सत्र में महाश्वेता देवी से संवाद का कार्यक्रम हुआ। केदारनाथ सिंह ने महाश्वेता देवी से पूछा कि अखबारी लेखन और साहित्यिक लेखन में वे क्या अंतर महसूस करती हैं, इसके जवाब में महाश्वेता देवी ने कहा कि अखबारी लेखन में तात्कालिकता का दबाव होता है जबकि सर्जनात्मक लेखन में वह दबाव नहीं होता। अखबारी लेखन में जगह की भी सीमा होती है। उसमें विस्तार से टिप्पणी की गुंजाइश नहीं होती जबकि सर्जनात्मक लेखन में यह गुंजाइश होती है। हालांकि दोनों के लेखन की प्रक्रिया बहुत ज्यादा भिन्न नहीं होती। एक अन्य सवाल

के जवाब में महाश्वेता ने कहा कि उन्होंने आजीवन आदिवासियों के मूलभूत सवालों के लिए संघर्ष किया और राज्य सरकार से वे अपेक्षा रखती हैं कि यहां के आदिवासियों के लिए पर्याप्त पेयजल, भोजन व आवास के साथ ही शिक्षा व स्वास्थ्य सेवाएं मुहैया हों। संगोष्ठी व संवाद कार्यक्रमों का संचालन विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे ने किया।

10 मार्चस्थान-कोलकाता केंद्र का सभा कक्ष

कवि होकर जीना न जीने के बराबर-अरुण कमल

कोलकाता, 10 मार्च। हिंदी के सुपरिचित कवि अरुण कमल ने कहा है कि कवि होकर जीना नहीं जीने के बराबर है। कवि को आम आदमी की तरह जीना चाहिए , भद्र व्यक्ति की तरह नहीं। कविता का भद्र होना ठीक नहीं। उसे सामान्य रहना चाहिए। कवि को पब्लिक फिगर नहीं होना चाहिए , सामान्य जन रहना चाहिए। अरुण कमल आज महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में आयोजित संवाद कार्यक्रम में पूछे गए प्रश्नों के जवाब दे रहे थे। आलोचक गौतम सान्याल के सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि कविता जीवन के अनुभवों से होनेवाले सुख को बढ़ा देती है। कविता का प्रभाव इतना पड़ता है कि वह व्यक्ति के चरित्र तक को बदल देती है।

मुक्तिबोध ने खुद उनके चरित्र को प्रभावित किया। मृत्यु के डर को दूर किया।

कार्यक्रम में बाएं से गौतम सान्याल, अरुण कमल, विश्वंभर नेवर और गोपेश्वर सिंह।

अरुण कमल ने कहा कि भाषा के बाहर कुछ भी घटित नहीं होता। भाषा के बाहर कविता भी संभव नहीं है। एक अन्य सवाल के जवाब में अरुण कमल ने कहा कि बिम्ब आरंभिक अवस्था है। बिम्ब बढ़ते-बढ़ते प्रतीक में बदल जाता है। एक दूसरे प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि पूरे एशिया में बौद्ध धर्म का प्रभाव पड़ा किंतु एशिया के साहित्य पर बौद्ध धर्म का प्रभाव बहुत कम पड़ा। अरुण कमल का मानना था कि समूची विश्व कविता में विचार दरअसल रोमांटिक कविता के साथ आया। कविता और कला दोनों के लिए विचार की महत्वपूर्ण भूमिका है। नए कवियों में नए विचार और नए अनुभव आ रहे हैं। नए अनुभवों वाले नए स्वर का स्वागत किया जाना चाहिए। एक अन्य प्रश्न के जवाब में अरुण कमल ने कहा कि जब तक रचना मूर्त न हो जाए , रचनाकार प्रसव जैसी यातना से गुजरता है।वरिष्ठ पत्रकार विश्वंभर नेवर के सवाल के जवाब में अरुण कमल ने कहा कि हिंदी समाज में कविता के

लिए प्रत्यक्षतः जगह नहीं है।

संवाद कार्यक्रम में बाएं से अरुण कमल, गोपेश्वर सिंह और डा. कृपाशंकर चौबे।

व्याख्यानःइस अवसर पर समकालीन कविता के सामाजिक सरोकार पर व्याख्यान देते हुए आलोचक डा. गोपेश्वर सिंह ने कहा कि हिंदी कविता की अपनी बुनियादी समस्याएं हैं। आज के कवि से वही अपेक्षाएं नहीं हैं जो पहले के कवियों से थीं। संवाद कार्यक्रम का संचालन युवा कवि निशांत ने किया और धन्यवाद ज्ञापन महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे ने किया।

14 मार्च स्थान-कोलकाता केंद्र का सभा कक्ष

नए कथाकारों में भाषा की अवज्ञा चिंताजनकः महेश कटारे

कोलकाता, 14 मार्च। वरिष्ठ कथाकार महेश कटारे ने कहा है कि नए कथाकारों में भाषा की अवज्ञा चिंताजनक है। कई ऩए कथाकारों की भाषा ऐसी होती है जिसे न हिंदी कह सकते हैं न अंग्रेजी न हिंग्लिश। श्री कटारे आज महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में 'समकालीन कहानी की समय सापेक्षता ' पर

व्याख्यान दे रहे थे।

व्याख्यान देते महेश कटारे। मंच पर बैठे हैं कृपाशंकर चौबे।

श्री कटारे ने कहा कि नई पीढ़ी के कई कथाकार शब्दों के अर्थ बोध के प्रति भी सतर्क नहीं हैं। उन्हें नहीं पता कि जिस शब्द का वे प्रयोग कर रहे हैं, उसका अर्थ पाठक क्या लगाएगा। यह बेचैन करनेवाली स्थिति है। उन्होंने कहा कि कहानी में लांच जैसे शब्द गलत हैं। यह साहित्य की नहीं , कार्पोरेट की शब्दावली है। आज की कहानियों में चौंकानेवाली भाषा तो है पर सही अर्थ बोध को अभिव्यक्त करने में वह सक्षम नहीं है। कहानी में शिल्प और वस्तु के प्रति जितनी सजगता जरूरी है , उतनी ही कसक का होना आवश्यक है। कहानी को बेहतर फलक देने के लिए कसक का होना आवश्यक है। इस संदर्भ में उन्होंने गालिब की यह कविता सुनाई-कोई मेरे दिल से पूछे तेरे तीर- ए-नीमकश को। वो खलीश कहां से होती, जो जिगर के पार होता। रगे संग से टपकता वो लहू कि फिर न थमता जिसे गम समझ रहे हो अगर वो शरार होता।

इसी तरह कहानी के लिए कसक का होना जरूरी है। श्री कटारे ने कहा कि कहानी का भविष्य साहित्य के भविष्य से जुड़ा है। यदि कहानी का भविष्य बेहतर होगा तो साहित्य का भविष्य भी बेहतर होगा। श्री कटारे ने कहा कि प्रगतिशील आंदोलन ने कहानी के कथ्य व शिल्प को बहुत प्रभावित किया। यह प्रभाव बहुत सकारात्मक रहा।

18 मार्चस्थान-कोलकाता केंद्र का सभा कक्ष

जनता से नहीं कटे हैं हिंदी लेखकः नामवर सिंह

कोलकाता 18 मार्च। हिंदी के सुप्रसिद्ध साहित्य समालोचक और महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. नामवर सिंह ने कहा है कि यह धारणा गलत है कि हिंदी के साहित्यकार जनता से कट गए हैं। डा. सिंह महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में आयोजित एक संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि हाल में संपन्न दिल्ली के विश्व पुस्तक मेले में हिंदी प्रकाशकों के मंडपों पर पाठकों की उमड़ी भीड़ और किताबों की बढ़ी विक्री से साफ है कि लेखकों और पाठकों में संबंध बना हुआ है। उन्होंने कहा कि विश्व पुस्तक मेले में सबसे अधिक विक्री हिंदी पुस्तकों की हुई और कालेज व विश्वविद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने बड़ी तादाद में किताबें खरीदी। पुस्तक मेले में उत्सव का जो उल्लास था , वह जयपुर के साहित्य उत्सव से भिन्न था। जयपुर के उत्सव

संगोष्ठी में प्रो. नामवर सिंह। साथ में डा. कृपाशंकर चौबे।

में तो बाजारवाद का जबर्दस्त असर था। डा. सिंह ने कहा कि हिंदी पाठकों को अनुवाद के जरिए भारतीय भाषाओं समेत विश्व का श्रेष्ठ साहित्य भी सुलभ है। डा. सिंह का कहना था कि अनुवाद के जरिए हिंदी लगातार भारतीय भाषाओं में पारस्परिक साझेदारी को बढ़ा रही है। भारतीय भाषाओं में ऐसा ही सहकार संबंध काम्य है। भारतीय भाषाओं और साहित्य का यह पारस्परिक आदान-प्रदान जितना बढ़ेगा , उतना ही हिंदी के प्रति अन्य भाषियों में व्याप्त आशंकाएं दूर होंगी। हिंदी को अब पूर्वोत्तर पर भी ध्यान देना होगा। वहां की रचनाओं का अब तक हिंदी में अनुवाद नहीं होने से ही आज तक पूर्वोत्तर का दर्द भारतीय दर्द नहीं बन पाया है। इसे ध्यान में रखते हुए ही महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र ने पूर्वोत्तर के साहित्य को हिंदी में लाने की योजना बनाई है। उन्होंने उम्मीद जताई कि हिंदी विश्वविद्यालय का कोलकाता केंद्र बंगाल ही नहीं , पूर्वोत्तर के प्रदेशों और पड़ोसी देशों में भाषा सेतु की ऐतिहासिक भूमिका निभाएगा।

उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के कि मौजूदा कुलपति विभूतिनारायण राय के कार्यकाल में वर्धा परिसर पूरी तरह से विकसित हो गया है और अब कुलपति का सारा ध्यान विश्वविद्यालय के कोलकाता और इलाहाबाद केंद्रों के विकास पर है। डा. सिंह ने उम्मीद जताई कि कि महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय का कोलकाता केंद्र बांग्ला के अतिरिक्त पूर्वोत्तर भारत की भाषाओं के साहित्य का हिंदी में अनुवाद जल्द शुरू कर देगा। उन्होंने विश्वास जताया कि मौजूदा कुलपति विभूति नारायण राय के कार्यकाल में कोलकाता केंद्र भाषा सेतु की ऐतिहासिक भूमिका निभा सकेगा। संगोष्ठी में कोलकाता के बुद्धिजीवी भारी संख्या में उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे ने किया।

1 अप्रैल 2012स्थान-कोलकाता केंद्र का सभा कक्ष

साहित्य के सम्मानों में सियासत का जोर : देवताले

कोलकाता। कवि सिर्फ कवि होता है। उसे किसी विशेषण की दरकार नहीं होती। कवि को मन से आदिवासी होना चाहिए। मैने ताउम्र इसकी कोशिश की है। यह मानना है हिंदी के चर्चित कवि चंद्रकांत देवताले का। वह रविवार की शाम महात्मा गांधी हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता सेंटर में छात्रों से मुखातिब थे। मौका था संवाद का। उनसे औपचारिक संवाद किया जेके भारती और कथाकार सृंजय ने। इस मौके पर देवताले ने संत तुकाराम पर हाल ही में लिखी आठ पंक्तियां भी सुनाई। उन्होंने कहा कि मुक्तिबोध को दायरे में बांधकर उनकी कविताओं पर चर्चा नहीं की जा सकती। वे एक आम इंसान थे। यही उनकी सबसे बड़ी खूबी भी थी। पुरस्कारों की राजनीति पर पूछे गए एक सवाल के जवाब में उन्होंने स्वीकार किया कि साहित्य जगत के सम्मानों और पुरस्कारों में घोर सियासत होती है। देवताले ने कहा कि कविता लिखने के लिए किसी खास मौसम या मौके की तलाश करने वाले लोगों से मुझे नफरत है। मैं तो कहीं भी, कभी भी कविता लिख लेता हूं।

संगोष्ठी में विचार रखते चंद्रकांत देवताले

देवताले ने कहा कि कवि एक साधारण आदमी होता है वह अपने भीतर की आवाज को साहस के साथ कहता है मेरी हर कविता अच्छी है जिंदगी की भाप हैं मेरी कविताएं कवि हमेशा आदिवासी होता है क्योंकि वह अपनी धरती, भाषा व पर्यावरण को बचाने के लिए हमेशा संघर्ष करते रहता है कवि को आत्ममुग्धता से बचना चाहिए कोई भी सम्मान मिलता है, वह मेरी परंपरा का सम्मान होता है यह प्रसिद्धि हमेशा खतरे की निशानी है कवि किसी एक भाषा और देश का नहीं होता है।

ये बातें महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय (वर्धा) के कोलकाता क्षेत्रीय केंद्र की ओर से आयोजित समकालीन कविता की समय सापेक्षता विषयक संगोष्ठी में हिंदी के वरिष्ठ कवि चंद्रकांत देवताले ने कहीं । उन्होंने कहा कि वैश्विक आंधी में शब्द अर्थ खोते जा रहे हैं । वैश्वीकरण, पूंजीवाद व विज्ञापन संस्कृति ने आज आमलोगों को जमीन से उखाड़ दिया है भले ही हमारे सामने टावर और एंटेना खड़े हो रहे हैं , लेकिन धरती पर पांव नहीं उन्होंने कहा कि देश के विश्वविद्यालयों ने पुस्तक संस्कृति को मार डाला है पुस्तक संस्कृति जब तक नहीं बढ़ेगी , तब तक विवेक कैसे जागृत होगा सार्थक कवि से अधिक जरूरी कवि होना है उन्होंने अकादमिक स्तर के पुरस्कारों की विश्वसनीयता खंडित होने के संबंध में पूछे जाने पर कहा कि जातीयता और क्षेत्रीयता इसमें बड़े ढंग से काम करती है जिन कवियों ने पाखंडों पर प्रतिवाद किया है , वे आज भी प्रासंगिक हैं रचनाकारों को कभी भी संतुष्ट नहीं होना चाहिए मेरे भीतर मेरा अध्यापक हमेशा जिंदा रहता है उन्होंने बताया कि सम्मान के रूप में जो भी शॉल मिलता है, उसे वह जरूरतमंद लोगों को दे देते हैं, ताकि उनकी ठिठुरन कुछ कम हो। संगोष्ठी में जेके भारती, सृंजय एवं सुनीता मंडल ने भी हिस्सा लिया । विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय केंद्र के प्रभारी डॉ कृपा शंकर चौबे ने संचालन किया।

12 अप्रैल 2012स्थान-कोलकाता केंद्र का सभा कक्ष

पत्रकारिता का कोई समालोचना शास्त्र नहीं-अच्युतानंद मिश्र

कोलकाता, 12 अप्रैल। माखन लाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति तथा हिंदी के सुप्रसिद्ध पत्रकार अच्युतानंद मिश्र ने कहा है कि पत्रकारिता का समालोचना शास्त्र होना चाहिए किंतु उसका कोई समालोचना शास्त्र नहीं है। श्री मिश्र आज शाम महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में पत्रकारिता और साहित्य के अंतर्संबंध पर आयोजित संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे।

संगोष्ठी में बाएं से कृपाशंकर चौबे, जेके भारती, अच्युतानंद मिश्र और सुनीता मंडल।

श्री मिश्र ने कहा कि आजादी की लड़ाई में जो पत्रकारिता मिशन थी , वह परवर्ती काल में प्रोफेशन बनी और अब कमिशन बन गई है। हिंदी पत्रकारिता और हिंदी साहित्य ने पिछले पौने दो सौ वर्षों में साथ-साथ विकास किया। हिंदी गद्य के निर्माण का अधिकांश श्रेय हिंदी पत्रकारों को है जिन्होंने अपनी हड्डियां गलाकर हिंदी की समृद्ध विरासत खड़ी की। लेकिन आजादी के बाद पत्रकारिता न सिर्फ साहित्य से दूर हुई , उसने कुछ अपवादों को छोड़कर सरकारी सुविधाओं के आगे घुटने भी टेक दिए और आज वह मुनाफे के धंधे में डूब गई है। युवा प्राध्यापकअभिजीत

सिंह ने कहा कि साहित्य से कटकर पत्रकारिता अपना ही अहित कर रही है।इस अवसर पर अच्युतानंद मिश्र ने श्रोताओं के प्रश्नों के उत्तर भी दिए। संगोष्ठी का संचालन युवा प्राध्यापक जेके भारती ने किया। स्वागत भाषण डा. कृपाशंकर चौबे और धन्यवाद ज्ञापन कांचरापाड़ा कालेज की हिंदी विभागाध्यक्ष सुनीता मंडल ने किया। संगोष्ठी के आखिर में गाजीपुर से आए जाने-माने लोक कलाकार विजय यादव ने भोजपुरी लोकगीत पेशकर कार्यक्रम में उपस्थित साहित्य प्रेमियों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

22 अप्रैल 2012 स्थान-कोलकाता केंद्र का सभा कक्ष

नकारात्मक प्रवृत्ति पत्रकारिता के लिए घातक--डा. पृथ्वीश नाग

कोलकाता, 22 अप्रैल। सुप्रसिद्ध भूगोलविद् और महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के कुलपति डा. पृथ्वीश नाग ने कहा है कि पत्रकारिता में नकारात्मक प्रवृत्ति बढ़ रही है और सकारात्मक खबरें निरंतर सिकुड़ती जा रही हैं। यह प्रवृत्ति घातक है, इससे बचना होगा। डा. नाग आज शाम महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र

कार्यक्रम में काशी विद्यापीठ के कुलपति डा. पृथ्वीश नाग का शाल ओढ़ाकर अभिनंदन करते समीर गोस्वामी। सबसे बाएं प्रो. राममोहन पाठक और सबसे दाएं हरिराम पांडेय।

में समकालीन पत्रकारिताः परिवर्तन और प्रवृत्तियां पर आयोजित संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे थे। संगोष्ठी में काशी विद्यापीठ के एमजेएमसी के 35 विद्यार्थियों ने विशेष रूप से हिस्सा लिया। डा. नाग का कहना था कि यह विशेषज्ञता का दौर है। पत्रकारिता के विद्यार्थियों को खबरों की प्रस्तुति से लेकर अखबारों की साज-सज्जा तक मेंविशेषज्ञता हासिल करनी चाहिए। सत्य और तथ्य के मान की रक्षा का उनमें जज्बा भी होना चाहिए।

काशी विद्यापीठ के पत्रकारिता संस्थान के निदेशक और संकायाध्यक्ष डा. राममोहन पाठक ने कहा कि समकालीन पत्रकारिता में पेड न्यूज सरीखी कई विकृतियां आ गई हैं , इसके बावजूद मिशनरी भावना से काम करनेवाले पत्रकार भी बचे हुए हैं। पूर्व रेलवे के मुख्य जन संपर्क अधिकारी समीर गोस्वामी ने कहा कि अब गंभीर खबरें भी मनोरंजन की शक्ल में दी जा रही हैं। इस घातक प्रवृत्ति को नहीं रोका गया तो इसके सांघातिक नतीजे होंगे। वरिष्ठ पत्रकार हरिराम पांडेय ने कहा कि सूचना और समाचार में फर्क किया जाना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे ने किया।

28 मई 2012स्थान-कोलकाता केंद्र का सभा कक्ष

दुनियाभर में प्रतिरोध का चेहरा एक जैसा-डा. चमनलाल

वर्धा, 28 मई। हिन्दी के साहित्य समालोचक और अनुवादक डॉ. चमनलाल ने कहा है कि दुनियाभर में प्रतिरोध की संस्कृति का चेहरा एक जैसा है। समाज अलग-अलग होते हैं पर जुल्म अथवा गरीबी के खिलाफ क्रांतिकारी कार्यक्रम एक जैसे होते हैं। डा. चमनलाल महात्मा गांधी अंतर्राष्टीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में प्रतिरोध की संस्कृत पर व्याख्यान दे रहे थे। उन्होंने कहा कि दुनिया में जगह-जगह प्रतिरोध अभी हाल में हुए। इस प्रतिरोध में उस निनानबे प्रतिशत जनता ने हिस्सा लिया जिसका खून चूसकर एक प्रतिशत आबादी अपार दौलत की मालिक बनी है। उस एक प्रतिशत आबादी की दौलत छिने बगैर समता की बात क्या की जा सकती है?

डा. चमनलाल ने कहा कि क्रांति के लिए क्यूबा का उदाहरण विरल है जहां फिदेल कास्त्रो तथा चे ग्वेवारा के नेतृत्व में महज बीस लोगों ने क्रांति की शुरुआत करके पांच साल से कम समय में तानाशाह सरकार की अस्सी हजार से ज्यादा फौज को नष्ट करके क्रांति संपन्न कर दी। उन्होंने क्यूबा क्रांति के नायक चे ग्वेवारा और भारत के क्रांतिकारी नायक भगत सिंह के बीच समानताओं का जिक्र करते हुए दोनों की निडरता और जनता के प्रति प्रतिबद्धता को रेखांकित किया। डा. चमनलाल ने कहा कि भगत सिंह ने अपनी फांसी का विरोध किया था और कहा था-हम जंगी कैदी हैं, हमें गोली से उड़ाओ। क्रांतकारी गोली से नहीं डरते। मौत से नहीं डरते।

व्याख्यान देते डा. चमनलाल। मंच पर बैठे हैं डा. कृपाशंकर चौबे।

प्रोफेसर चमनलाल ने मणिपुर का उदाहरण देते हुए बताया कि 1891 में अंग्रेजों ने मणिपुर पर कब्जा किया और वहां के युवराज टिकेंद्रजित सिंह और सेनापति थांगला जनरल को आतंक फैलाने के लिए आठ हजार श्वेत वस्त्रधारी स्त्रियों के सामने फांसी दी तो थांगला जनरल ने अट्टहास कर फांसी चढ़ते हुए ब्रिटिश उपनिवेशवाद की अकड़ धूल में मिला दी। इसी परंपरा में अगर आज का उदाहरण लें तो मणिपुर की इरोम शर्मिला चानू ने ग्यारह वर्षों से भूख हड़ताल कर एक दृष्टांत दुनिया के सामने पेश किया है। इरोम का चेहरा संघर्ष से दमकता चेहरा है। इरोम को फोर्स फिडिंग कराई जाती है। उसने अपने मातृत्व का बलिदान किया है। अपनी मां से वह ग्यारह साल से नहीं मिल पाई है। डा. चमनलाल ने कहा-मैं अभी इरोम की मां से मिलकर आ रहा हूं। मां-बेटी में समझौता है कि जब तक सशस्त्र बल विशेष अधिकार कानून रद्द नहीं हो जाता, वे नहीं मिलेंगी। संगोष्ठी को जेके भारती, डा. अभिज्ञात, सुशील कांति और बीके उपाध्याय ने भी संबोधित किया।

संगोष्ठी के बाद डा. चमनलाल से संवाद का कार्यक्रम हुआ। चमनलाल ने वरिष्ठ कथाकार विमलेश्वर द्विवेदी , अनवादक व रंगकर्मी सुशील कांति और साहित्यकार रावेल पुष्प के सवालों के खुलकर जवाब दिए। संगोष्ठी व संवाद कार्यक्रम का संचालन कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे ने किया।

14-15 जुलाई 2012, स्थान-भारतीय भाषा परिषद का सभा कक्ष

हिंदी ही देश को जोड़ती है-महाश्वेता देवी

कोलकाता। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र द्वारा ग 14 और 15 जुलाई 2012 को भारतीय भाषा परिषद सभा कक्ष में 'हिंदी और पूर्वोत्तर की भाषाएं ' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजिक की गई। इसका उद्घाटन करते हुए विख्यात लेखिका महाश्वेता देवी ने कहा कि हिंदी ही पूरे देश को जोड़ती है। उन्होंने पूर्वोत्तर में हिंदी के समुचित विकास को सुनिश्चित करने की जरूरत पर बल दिया। इस सत्र की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति विभूति नारायण राय ने कहा कि पूर्वोत्तर की भाषाओं के साथ हिंदी की पारस्परिकता को बढ़ाना उनके विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र का मुख्य मकसद है।

संगोष्ठी में महाश्वेता देवी और कुलपति विभूतिनारायण राय

डा. देवराज ने कहा कि हिंदी और पूर्वोत्तर का बहुत गाढ़ा नाता है। अनुवादकों की एक लंबी परंपरा रही है जो पूर्वोत्तर के साहित्य को हिंदी में ला रहे हैं। डा गोपाल प्रधान का कहना था कि उत्तर पूर्व एक प्रशन है। रविशंकर रवि का कहना था कि उतर पूर्व का जो साहित्य अनुवाद के जरिए हिंदी में उपलब्ध हुआ , वह बहुत समृद्ध है। शंभुनाथ ने कहा कि हिंदी पूर्वोत्तर में भाषा सेतु बंधन की भूमिका निभाने में समर्थ हो रही है।

संगोष्ठी में बाएं से जोरम अनिया टाना, मिलन रानी जमातिया, कृपाशंकर चौबे, विभूतिनारायण राय, देवराज और जोशी जोसेफ।

डा. कृष्णमोहन झा ने समूचे पूर्वोत्तर में हिंदी के परिदृश्य पर, जोरम अनिया टाना ने मिजोरम में हिंदी की स्थिति पर, एच. डेंगकिमी ने अरुणाचल में हिंदी शिक्षा की समस्या पर , डा. भरत प्रसाद ने मेघालय में हिंदी की दशा पर , मिलनरानी जमातिया ने

त्रिपुरा पर वक्तव्य दिया।

संगोष्ठी में उपस्थित श्रोता। फोटो-राजेश अरोड़ा

दूसरे सत्र में हिंदी की बंगीय भूमिका पर डा. अमरनाथ , डा. तनुजा मजुमदार, नवारुण भट्टाचार्य, गौतम सान्याल, प्रसून भौमिक ने वक्तव्य दिए। डा. हरिश्चंद्र मिश्र ने हिंदी और ओड़िया के संबंधों पर वक्तव्य दिया। संगोष्ठी के एक सत्र का संचालन जेके भारती और दूसरे सत्र का संचालन प्रमथनाथ मिश्र ने किया। धन्यवाद ज्ञापन कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे ने किया। संगोष्ठी की व्यवस्था संभालने में कुलपति के निजी सचिव तथा महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विवि कर्मचारी संघ के महासचिव राजेश अरोड़ा में बहुत सहयोग किया।